सप्तम अध्याय

'प्रिय शबनम' : उद्देश्य

सप्तम अध्याय

• 'प्रिय शबनम': उद्देश्य •

७:१ स्वरूप :

डॉ.दंगल झाल्टे के मतानुसार -"औपन्यासिक कृति की सामुहिक मूल्यवत्ता एवं उसका मूलभूत स्वरूप उसकी रचना-प्रक्रिया के उद्देश्य द्वारा ही निर्धारित किए जा सकते हैं। अत: उपन्यास के अनेकविध रूपों तथा प्रयोगों को समझाकर उसका लेखा-जोखा प्रस्तुत करने से पहले उसके मूल्य,दृष्टिकोण अथवा उद्देश्य को परखना नितांत आवश्यक होता है। तभी उस विशिष्ट रचना का सही,निस्पृह एवं सम्यक मूल्यांकन करना सम्भव है। अन्यथा लेखकीय दृष्टिकोण और समीक्षक के विचारों में अन्तराल आने का खतरा उपस्थित हो सकता है।"[१] हर उपन्यास का लेखन विशिष्ट उद्देश्य से किया जाता है। उद्देश्य के कारण ही उपन्यास के स्वरूप,कथ्य एवं आशय के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण बातें दृष्टि गोचर होती है। हिन्दी उपन्यासों के क्रमिक विकास में उनके ध्येय,दृष्टिकोण तथा उद्देश्य आदि में क्रमश: बदलाव आता गया है। समयानुसार पाठकों के बदलते स्तर और अभिरूचि के अनुसार उपन्यास के स्वरूप में भी उद्देश्यगत परिवर्तन होता जा रहा है।

उपन्यास का उद्देश्य मनोरंजन तो अवश्य है किन्तु आज वे मनोरंजन के अतिरिक्त किसी एक विशिष्ट उद्देश्य का प्रतिपादन करते हैं और जीवन की अपने दृष्टिकोण के अनुसार व्याख्या करते हैं। लेखक अपने विचारों या सिध्दान्तों के प्रतिपादन के लिए अनेक पात्रों की सृष्टि करता है और उनके परस्पर-विरोधी विचारों में संघर्ष दिखाकर अपने सिध्दान्त की उत्कृष्टता को सिध्द करता है। लेखक के आदर्शों और विचारों का प्रतिनिधित्व नायक द्वारा होता है।

डॉ.प्रतापनारायण टण्डन के अनुसार --" उपन्यास का स्वरूप बहुत कुछ उसके उद्देश्य से निर्धारित होता है,इसलिए उपन्यासों के विभिन्न रूपों को समझाने से पहले उन उद्देश्यों के बारे में पूर्णत: स्पष्ट हो जाना आवश्यक है जो कालान्तर में विभिन्न उपन्यासकारों को अपनी बात कहने के लिए उपन्यास का माध्यम चुनने के लिए प्रेरित करते रहे हैं।"[२]

डॉ.प्रतापनारायण टण्डन के अनुसार उद्देश्यगत विभिन्न धारणाएँ निम्नलिखित है [३]-

७:१:१ नीति शिक्षा -

विदेशी उपन्यासों की अपेक्षा हिन्दी के सभी उपन्यासों में नैतिक आग्रह किसी-न-किसी रूप में अधिक रहा है।

७:१:२ मनोरंजन -

प्रारम्भिक उपन्यासों का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन कहा जा सकता है ,साथ ही मनुष्य की कुछ मूलभूत वृत्तियों का कल्पना द्वारा अतिरंजित चित्रण।

७:१:३ कौतुहल सृष्टि -

वास्तव में हिन्दी साहित्य में सर्वप्रथम कौतुहल सृष्टि की दृष्टिसे उपन्यास रचना करनेवाले उपन्यासकार मिलते हैं। जिसमें जासूसी,तिलिस्मी,तथा ऐय्यारी आदि विषयोंपर कथा रचना करते थे।

७:१:४ सुधार भावना -

कुरीति निवारण अथवा समाज सुधार का उद्देश्य भी प्रारम्भिक युग से हिन्दी उपन्यास के विविध लक्ष्यों में से प्रधानता लिऐ हुए रहा है।

७:१:५ हास्य सृष्टि -

पूर्ण रूप से हास्य सृष्टि के माध्यम से मनोरंजन के उद्देश्य से लिखे गये उपन्यास इसमें आते हैं।

७:१:६ समस्याओं का चित्रण -

समाज के विविध पक्षों से सम्बन्धित समस्याओं को गम्भीर रूप से उपन्यास में प्रस्तुत किया जाता है ।

७:१:७ राजनीतिक उद्देश्य -

विशुध्द राजनीतिक उद्देश्य को लेकर लिखे गये हिन्दी उपन्यासों की संख्या कम है । हिन्दी में भी राजनीतिक उपन्यासों का आविर्भाव मुख्यत: उस समय से हुआ जब कॉंग्रेसी आन्दोलन ने जोर पकड़ा ।

७:१:८ मार्क्सवादी उद्देश्य -

मार्क्सवाद का अधिक संतुलित और ग्राह्य रूप हमें प्रगतिशील आन्दोलन के कुछ बाद देखने को मिलता है । मार्क्सवाद से प्रेरित प्रगतिशील उपन्यासों का मुख्य उद्देश्य एक ऐसे साहित्य की रचना थी, जिसका सैध्दान्तिक आधार द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद हो और विषयवस्तु जनसाधारण का जीवन तथा वास्तविक जीवन की सामाजिक आर्थिक विषमताएँ आदि ।

७:१:९ जीवन दर्शन का प्रकटीकरण -

कुछ उपन्यासकारोंने जीवन दर्शन को (शायद जीवन दृष्टि कहना अधिक ठीक होगा) उपन्यास का अनिवार्य अंग माना है । विशेषकर आधुनिक उपन्यासों में जहॉं कथानक तत्त्व शिथिल और विशृंखल रहता है, जीवन दृष्टि का ही वह आधार है, जो उपन्यास को सूत्रबध्द रखता है ।

७:२ ' प्रिय शबनम ' का उद्देश्य -

' प्रिय शबनम ' देवेश ठाकुर का दूसरा उपन्यास है जो १९७९ में पराग प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित हुआ । ' प्रिय शबनम ' सादृदेश्य कलाकृति है । समकालीन समीक्षाकोंने ' प्रिय शबनम ' उपन्यास को बहुत सराहा है । साथ ही देवेश जी की साहित्यिक दृष्टि तथा उनकी व्यक्तित्व की प्रधान रेखाएँ ' प्रिय शबनम ' उपन्यास में अंकित हो गई है । ' प्रिय शबनम ' के उद्देश्य के सन्दर्भ में व्यक्त समीक्षकों के कुछ अभिप्राय दृष्टव्य है ।

७:३: कुछ अभिप्राय -

डॉ.शंकर पुणतांबेकर कहते है --" इसमें सन्देह नहीं की ' प्रिय शबनम ' मध्यवर्गीय की अत्यन्त सरस एवं प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत एवं एक अनूठी गाथा है। आज के माहौल में मध्यवर्गीय बुध्दिजीवी जिन विभिन्न त्रासदियों से गुजरता है उसका यथार्थ और जीवन्त चित्रण पाठक को प्रभावित किये बिना नहीं रहता।"[४]

डॉ.शशीप्रभाशास्त्री जी कहती है --" इस उपन्यास के लघु कलेवर में लेखक ने दो युवा हृदयों के बीच खडी वर्गभेद की दीवार के माध्यम से उनके विच्छिन्न हो जाने का ताना-बाना अत्यन्त कुशलता से बुना है।"[५]

डॉ.मानुदेव शुक्ल कहते है --" प्रिय शबनम ' उपन्यास में बार-बार देवेश ठाकुर ने ईमानदारी,सहजता और मानवतावादी चेतना को महत्त्व प्रदान किया है। इनके सन्दर्भ में नैत्तिक मूल्य,चारित्रिक दृढता और संकल्प-शक्ति को मान्यता मिली है।.... कथा नायक मंगल के संघर्ष में इसी उद्देश्य की सिध्दि हुई है और शम्मूदा के बलिदानों में इसी आदर्श को पुष्टि।"[६]

डॉ.लालसाहब सिंह कहते है --" उपन्यास में मार्क्सवादी चिन्तन की अभिव्यक्ति कथाक्रम के प्रसंग में ही होती है। लेखक मुख्य रूप से व्यक्ति के लिए या इसे यों कहें कि पार्टी मैन के लिए चारित्रिक रूप से उन्नत होना आवश्यक मानता है।"[७]

डॉ.गोपाल कहते है --" प्रिय शबनम ' निम्नमध्यवर्गीय व्यक्ति के सांस्कारिक संघर्षों की गाथा है। मध्यवर्गीय संस्कारों और कुण्ठाओं की जकड कितनी मजबूत होती है और उसमें फंसा हुआ मध्यवर्गीय मन कितना विवश और असहाय होता है,इसका बोध कराने में ' प्रिय शबनम ' अत्यन्त सफल कृति बन पडी है। इस कृति की पठनीयता इस बात में है कि हम कथानायक मंगल के मन के अन्त संघर्ष,उलझन और भटकाव का साक्षात्कार बिना किसी बिचौलिए के करते है।"[८]

बालकृष्ण उपाध्याय कहते हैं --" लेखक ने बडे सहज रूप से रोजमर्रा के जीवन की घटनाओं को लेकर सारे सामाजिक और पारिवारिक सम्बन्धो की जाँच-पडताल की है और उसे अपने वास्तविक रूप में उभारकर सामने कर दिया है जिसमें माता-पिता, भाई-बंधु, प्रेमी-प्रेमिका, पति-पत्नी आदि सारे आपसी सम्बन्धो के छद्म को हम निरावरण होते हुए देखते हैं और पाते है कि जर्जर आपसी सम्बन्धो के छद्म की ओट में कैसी दारुण त्रासदी घटित हो रही है।" [९]

' प्रिय शबनम ' के उद्देश्य के बारे में डॉ. ललित शुक्ल का कहना है कि - " प्रिय शबनम " युवा मन की अतीत-गाथा है, इस रचना का संसार मध्यवर्गीय है। नयी शिक्षा और विज्ञान की नई रोशनी में किसी पढे-लिखे नवयुवक को अपनी ग्रामीण पत्नी का फूहडपन खलता है। यह बेमेल तालमेल कभी-कभी भयंकर परिणाम सामने लाता है। इस विसंगति से उपजे तनाव को दोनों झेलते हैं और यदि पुरूष या परकिया प्रेम प्रबल रहा तो उस तीसरे प्राणी को भी झेलना पडता है। ' प्रिय शबनम ' में यह समस्या बडे विस्तार से चित्रित की गई है।" [१०]

डॉ. वसुधा सहस्त्रबुध्दे ने ' प्रिय शबनम ' के उद्देश्य के बारे में कहा है -- " व्यक्ति बचपन से ही कुछ आकांक्षा और अपेक्षा लेकर जीने की कल्पना करता है। उसमें सफलता प्राप्त करने के लिए परिश्रम के साथ-साथ उसे सही परिवेश संस्कार तथा मार्गदर्शन की आवश्यकता भी होती है। जीवन में आस्था रखना आवश्यक है। अपने सुख के साथ समाज के दु:खों को जोडकर हम अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं। उसके लिए दल या संस्था से जुडने की आवश्यकता नहीं है। लेखक का कहना है, व्यक्तिगत स्तर पर भी जागृति सह संभाव्य है।" [११]

७:४ <u>स्त्री-पुरूष सम्बन्ध</u> -

देवेश जी ने ' प्रिय शबनम ' उपन्यास के माध्यम से स्त्री-पुरूष सम्बन्ध के विविध प्रकार पाठकों के सामने प्रस्तुत किये हैं। उपन्यास का नायक मंगल बम्बई के सेंट थामस कॉलेज में अध्यापक है। अपनी चतुर्थ वर्ष की छात्रा शबनम से वह प्यार करता है। मंगल के आदर्श, उसकी मानवीयता और अध्ययन से प्रभावित होकर शबनम ही प्यार में अगुहा बनती है। परिष्कृत संस्कारों से पूर्ण शबनम को

सम्पन्नता पूर्ण जिन्दगी से मोह नहीं है । उसे वर्गीय अभिजात्य के प्रति घृणा है । इसीलिए वह मध्यवर्गीय युवक मंगल से निस्सीम प्रेम करती है,उसके आदर्श अपने में उतारना चाहती है,उसे उसके कॉम्प्लेक्स से बाहर निकालने में पूरी तरह सहायता करती है । लेखक यहाँ परम्परा से चली आ रही इस धारणा को तोडता है कि -- "बडे या उच्च तबके के लोग बुरे ही होते हैं और छोटे या निचले तबके के लोग नित्य अच्छे । कि सन्तोष,विवेक और संयम उच्च तबके में नहीं पाया जाता,यह निम्न तबके में ही देखा जाता है ।" १२

लेखकने यहाँ दो-प्रेमियों का आदर्श सामने रखने का प्रयास किया है । शबनम उच्चवर्ग की होती हुयी भी मध्यवर्ग के युवक मंगल से प्यार करती है,यहाँ उसके आदर्श प्यार का चित्रण हुआ है । वह मंगल की परिस्थिति जानने के बाद भी उससे दूर नहीं होना चाहती । और जब मंगल उससे सम्बन्ध विच्छेद कर लेता है तो भी वह उसके प्रति नाराज नहीं है । मंगल भी चाहता था कि उसके साथ साफ-सुथरी जिन्दगी जिये परन्तु उसके कॉम्प्लेक्स उसमें बाधा डालते हैं । लेखक ने यहाँ गुरू-छात्रा सम्बन्ध तथा प्रेमी-प्रेमिका के सम्बन्ध में आदर्श दिखाया है । उनके प्यार में कहीं भी शारीरिक वासना या कामान्धता का अतिरेक नहीं है । इन दोनों के माध्यम से आदर्श प्यार का उद्घाटन करना यही लेखक का उद्देश्य रहा है ।

मंगल एक अध्यापक है अत: उसके अपरिष्कृत,उच्छृंखल,सीमाहीन और गलित नारी लाजो के साथ सम्बन्ध अच्छे नहीं लगते । परन्तु देवेश जी ने दो समान मध्यवर्गीय परिवेश के लोग में एक-दूसरे के प्रति अपनाने की भावना ज्यादा रहती है, यही कहना चाहा है । मंगल को शबनम से ज्यादा लाजो अपने वर्ग की लगती है,वहाँ वह घरेलु सुख पाता है । मंगल की लाजो को अपनाने में दूसरी उदात्त भावना यही रही है कि परित्क्ता और असहाय लाजो को अपनाकर वह पार्टी की दृष्टिसे उच्च आदर्श स्थापित कर सक्ता है । मंगल-लाजो के सम्बन्ध अनैतिक लगते है,परन्तु जब मंगल शबनम को छोडकर लाजो को अपनी पत्नी मानता है तो पाठक की सहानुभूति मंगल से जुड जाती है । बचपन से मंगल को लाजो से लगाव था, इसी कारण वह उसे अपनाता है,परन्तु जब दोनों पति-पत्नी के रूप में रहते है

तो दोनों में हमेशा तनाव रहता है । मंगल और लाजो के सम्बन्ध से लेखक यही कहना चाहते हैं कि पति-पत्नी शिक्षित तथा मानसिक स्तर पर समान होने चाहिए । गँवार पत्नी तथा शिक्षित पति के अनमेल विचारों से गृहकलह बढता ही जाता है ।

दूसरा उद्देश्य यह रहा हैकि नारी में अपने को प्रदर्शित करने की भावना होती है । उस भावना के कारण वह अपनी आर्थिक परिस्थिति देखे बिना आचरण करती है । उसका परिणाम कुटुम्ब-विच्छेद होने में होता है । ऐय्याशी भरे आचरण के कारण वह अपने सब रिश्ते-नाते भूल जाती है और अपने पति को भी ब्लैक-मिल करने में नहीं हिचकचाती है ।

निम्नवर्ग का पात्र है - मूलचंद,जो अपनी अय्याश पत्नी लाजो की माँगें पूरी करने में नाकामयाब रहता है । इसी कारण लाजो मूलचंद को हमेशा के लिए छोड आती है । इन दोनों के रिश्ते में कहीं भी पति-पत्नी का प्यार नहीं दिखाई देता है । शुरु में मूलचंद लाजो को मारता-पीटता और झगडता है,इसीलिए तथा ससुराल में अपनी आवश्यकताएँ पूरी न होते देख लाजो मूलचंद के पास वापस नहीं जाती । लाजो एक विवाहित नारी होते हुए भी मंगल से सम्बन्ध रखती है, मंगल के घर में उसके कारण संघर्ष निर्माण होता है । मूलचंद भी मंगल और लाजो के सम्बन्ध में अधर्मता नहीं मानता । उसे मालूम है उसकी पत्नी कई वर्षों से मंगल के साथ रही है । परन्तु उसका पत्नी के प्रति आक्रोश नहीं है । अन्त में वह लाजो को स्वीकारता है । उसके पीछे भी उसका स्वार्थ छिपा रहता है । बेटी आस्था के माध्यम से वह मंगल को ब्लैक-मिल करता है ।

लेखक का उद्देश्य रहा है कि जहाँ पति-पत्नी में आपसी सामंजस्य न हो, जहाँ वैचारिकता न हो,वहाँ ऐसे संघर्ष चलते रहेंगे और साथ में दूसरों के घरों में भी ऐसे लोग संघर्ष निर्माण करते रहेंगे ।

मंगल की माँ के माध्यम से लेखक ने और एक नारी की प्रवृत्ति को उजागर किया है । मंगल की माँ पुत्रवत्सल,धर्मप्राण,आत्मसम्मानी है । परन्तु उसका दूसरा रूप जो हमें लाजो के माध्यम से मालूम होता है वह है - गिरी हुयी नारी । जो

अपने पहले पति को छोडकर तथा मंगल के पिता की पहली पत्नी को मारकर उसके साथ रहती है। वह दूसरों का संसार मिटाकर अपना संसार बसाना चाहती है और किये हुये पाप को छिपाने के लिए धर्म-कर्म करती रहती है। दूसरों के सुखी जीवन में आग लगाकर अपना उल्लू सीधा करती है।

इसप्रकार लेखक ने मंगल के माता-पिता के माध्यम से यही बताना चाहा है कि पतिनिष्ठा-पति-पत्नी प्रेम के बगैर कुटुम्ब नहीं टिक सकते। नहीं तो गृह-कलह, सन्तान का घर से भाग जाना, माता-पिता के प्रति द्वेष निर्माण होने की संभावना होती है।

शम्भूदा की पत्नी अपने दोस्त के साथ भाग जाती है क्यों कि शम्भूदा मोह से अलिप्त व्यक्ति है। विजया घोषाल जैसी लडकी अपना स्वार्थ साधने के लिए शम्भूदा के साथ सम्बन्ध स्थापीत करती है। इन सभी स्त्री-पुरूष रिश्तों में कहीं-न-कहीं अधर्मता, अव्यावहारिकता, प्रेम का अभाव, एक दूसरे के प्रति निष्ठा का अभाव दिखाई देता है।

लेखक ने आदर्श पति-पत्नी का (स्त्री-पुरूष सम्बन्ध) रूप उद्देश्य की दृष्टि से हमारे सामने रखा है। वह है शबनम तथा उसके पति। पति चार साल से लापता है फिर भी शबनम में विश्वास है कि वह वापस आयेगा। यहाँ उसकी पति निष्ठा, इंतजार का अनोखा उदाहरण लेखक ने दिया है। जैसे -- " प्रेमी से प्रेम किया तो पूरी निष्ठा के साथ और जब यही पति से किया तो वही निष्ठा इधर मोड ली, और पति के न रहते भी उसे डिगने नहीं दिया।[१३]" इसप्रकार आदर्श पतिव्रता नारी का चित्रण करना लेखक का और एक उद्देश्य रहा है।

७.५ कुण्ठाग्रस्त व्यक्ति का मनोद्घाटन --

वर्ग-भेद प्रेम की मनोदशा में भी कैसी गाँठियाँ डाल देती है, यही 'प्रिय शबनम' उपन्यास का प्रमुख कथ्य है। लेखक का महत्वपूर्ण उद्देश्य रहा है कि मध्यवर्गीय व्यक्ति की मानसिकता का चित्रण करना तथा उससे उत्पन्न प्रतिक्रिया का विवरण देना। निम्न-मध्यवर्ग का युवक बौध्दिक दृष्टि से सम्पन्न हो जाने पर

भी अपनी कुण्ठाओं से मुक्त नहीं हो पाता, उसका अतीत उसे हरदम अपने नागपाश में जकड़े रहता है और उसके मध्यवर्गीय संस्कार उसे कोई क्रान्तिकारी कदम नहीं उठाने देते ।

कुण्ठाग्रस्त व्यक्ति यदि कितने ही अच्छे परिवार में जाये, वह मध्यवर्ग से उठकर उच्चवर्ग की सम्पन्नता में जाये परन्तु उसके मध्यवर्गीय संस्कार या उसके साथ जुड़ी मानसिकता अलग नहीं होती, उसमें वह हमेशा उलझा हुआ दिखाई देता है । लेखक का भी कहना है कि, "मानसिकता को बदलना पुनर्जन्म लेना होता है । और पुनर्जन्म अमर होता है, तो उसके लिए एक पूरे जीवन को सहना पड़ता है । जितना सहोगे उतना सफल होगे । जितना मन को रोकोगे उतना आगे बढ़ोगे ।"[१४]

मंगल ने अपनी मानसिकता के कारण शबनम के साथ एक साफ-सुथरी जिन्दगी को ठुकरा दिया है । तथा उसके कारण जीवन में आये अनेक सुखदायी क्षणों को गलत निर्णय में बदल दिया है । मंगल के विचार मानवतावादी तथा उच्च आदर्श के भुल होते हुये भी वह अपनी कुण्ठाओं से बाहर नहीं निकल सका । उसमें खून में कुण्ठाओं की एक लम्बी परम्परा पलती रही है और उससे मुक्त होने की कोशिश उसमें दिखाई देती है ।

मंगल में आत्म-हीनता का भाव शुरू से दिखाई देता है । परन्तु लाजो उसे छोड़कर हमेशा के लिए चली जाती है । तो मंगल सोचता है कि मूलचंद जैसा आदमी जिसके साथ अन्याय हुआ है, वह फिरसे जिन्दगी सुरू कर सकता है । अत: वह आस्था को लेकर शोषित लोगों के कार्य में जुट जाता है ।

इस प्रकार आदमी में कितनी भी मानसिकता हो, आत्म-हीनता हो, हीनग्रंथी हो या कुण्ठाग्रस्तता हो, वह उसमें संस्कार के रूप में क्यों न हो आदमी उसमें परिवर्तन कर सकताहै, उसके लिए उसमें मानवीयता का होना आवश्यक है , यही लेखक का उद्देश्य रहा है । और कुण्ठाग्रस्तता से मुक्ति पाने का उपाय है, जनसेवा । क्यों न वह वैयक्तिक स्तर हो ।

७:६ महानगरीय समस्याओं का चित्रण --

लेखक ने ' प्रिय शबनम ' में बम्बई महानगर का चित्रण सूक्ष्मता से किया है। उपन्यास का पूरा कथानक इसी महानगर में घटता है। महानगर के उच्च, मध्य तथा निम्न वर्ग के चित्रण में सूक्ष्मता दिखाई देती है। महानगरीय समस्याओं के अन्तर्गत लेखक ने ज्यादातर मध्यवर्ग की समस्याओं की ओर ध्यान दिया है। मध्यवर्ग में आवास की समस्या, यातायात की समस्या, वसई की बस्तियों का वर्णन, वरसोवा के सागर तट का वर्णन आदि का वर्णन लेखक ने किया है। आवास की समस्या महानगर की प्रमुख समस्या है। बिजली, पानी आदि की समस्या भी चित्रित है। नौकरी पर आना-जाना आगमन की एक गहन समस्या बन गयी है।

निम्नवर्ग में अज्ञान, शोषण, सस्ती ऐयाशी, अंध:विश्वास, झगडें आदि समस्याओं की ओर लेखक ने ध्यान दिया है। उच्चवर्ग के अलिशान फ्लैट, उनका रहन-सहन, अनावश्यक खर्च आदि का भी चित्रण किया है।

महानगर में बढती होटल-क्लब संस्कृति की ओर भी लेखक ने इशारा किया है। बडे घर के बेटे-बेटियाँ होटल में आते है, ऐयाशी दोस्तों से मिलते हैं। लडके-लडकियाँ शराब पीकर नाचते-गाते हैं। लेखक ने इस समस्या की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है। तथा इनपर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव लेखक ने इनके माध्यम से प्रस्तुत किया है।

इसप्रकार बम्बई जैसे महानगर का चित्रण करना तथा महानगरीय समस्याओं को चित्रित करना लेखक का उद्देश्य रहा है।

७:७ मार्क्सवादी वैचारिकता -

' प्रिय शबनम ' उपन्यास में देवेश जी ने नायक मंगल और शम्मूदा के माध्यम से पार्टी के दो चरित्रों को चित्रित किया है। शम्मूदा पार्टी के सच्चा कार्यकर्ता है और मंगल पार्टी के नामपर बाताडम्बर है। मंगल मार्क्सवादियों के

उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, जो उपर से सर्वहारा के शुभ-चिन्तक और भीतर से भोगवादी दर्शन का पोषक है। वह मार्क्स और फ्रायड दोनों को एक साथ जीना चाहता है। वह अभाव को दूर करके अमीर बनना चाहता है। वैचारिक स्तर पर आम आदमी के लिए जीना भी चाहता है। देश की आर्थिक दुरावस्था उसके विचारों को मथती भी है। वह आराम को जीवन के लिए आवश्यक समझाता है किन्तु उसका विवेक तुरन्त उसे झंझोड़ता है --" आराम हराम नहीं है। भले ही" आराम हराम है " का नारा अपनी तुकबन्दी के कारण आकर्षित करता हो, लेकिन इसमें भावुकता ही ज्यादा है और भावुकता व्यवहार्य नहीं होती। कोई भी आदमी आराम को हराम मानकर कितने दिन जिन्दा रह सकता है।" [१५]

शबनम द्वारा विवाह का प्रस्ताव आनेपर वह उसे अपने मार्क्सवादी विचारों की दुहाई देते हुए अपने दायित्व का बोध प्रकट करता है। मंगल की धारणा के अनुसार समाज में दो वर्ग है शोषक और शोषित। शोषक वर्ग सुविधाभोगी होता है उसका उद्देश्य मुनाफा कमाना है और उसके लिए वह श्रम एवं साधनों का शोषण करता है। शोषक वर्ग स्वेच्छा से अपना अधिकार नहीं छोड़ेंगे इसीलिए उत्पादन के साधनों पर अधिकार करना आवश्यक है। और इसके लिए शोषक और शोषित का परस्पर संघर्ष अपरिहार्य है। सर्वहारा की सत्ता के लिए क्रान्ति आवश्यक है। वह समाज में परिवर्तन चाहता है, वह क्रान्ति का समर्थन करता है। उसे विश्वास है कि -" एक दिन आग लगेगी और उसमें सारा अन्याय और शोषण जलकर राख हो जायेगा।" [१६]

वैचारिक दृष्टि से मंगल मार्क्सवादी चिन्तन के धरातल पर खड़ा दिखाई देता है। लेखक ने कथानायक मंगल को मार्क्सवादी विचारों का एक निर्बल पात्र के रूप में प्रस्तुत किया है। उसके मार्क्सवादी मुखौटे में भोगवादी संस्कार पलते है। पार्टी में व्याप्त चारित्रिक विघटन ने लेखक को अधिक प्रभावित किया है। पार्टी के लिए चरित्र संस्कार एक कठिन प्रक्रिया है। वह स्वयं मानता है -" घर में मार्क्सवाद की दो-चार पुस्तकें रख लेने से न कोई मार्क्सवादी हो जाता है न

क्रान्तिकारी, उसके लिए एक संस्कार चाहिए।[१७] और मंगल में यह संस्कार नहीं है। वह अन्ततक अपने भीतर न तो सच्चे मार्क्सवादी का संस्कार ही विकसित कर पाता है और न ही सही मार्क्सवादी चरित्र। देश के अधिकांश मार्क्सवादियों का यही चरित्र उनकी राजनीतिक विफलता का कारण भी है। ऐसे चरित्र का चित्रण करना लेखक का महत्वपूर्ण उद्देश्य रहा है।

रॉबीन चटर्जी और शम्भूदा चरित्र सम्पन्न तथा संस्कारशील मार्क्सवादी है। शम्भूदा बम्बई केन्द्र के नेता है। उन्होंने अपना सारा समय पार्टी के कार्य के लिए समर्पित कर रखा है। वे व्यक्तित्व और कृतित्व में साम्य के पक्षधर है। चरित्र को जीवन में सर्वोच्च मानते हैं। विवाह और यौन आकर्षण उनकी दृष्टि में जीवन के लक्ष्य नहीं है। शम्भूदा के माध्यम से लेखक ने जन-सेवक के वास्तविक चरित्र को चित्रित किया है। जनसेवक के लिए मांसल आकर्षण अर्थ-हीन है, उनका व्यक्तित्व पारदर्शी होना चाहिए। पार्टी के लोगों का चरित्रवान होना बहुत आवश्यक है। स्वतन्त्रता के नामपर स्वच्छन्दता और नैसर्गिक इच्छाओं के नाम पर रोमान्स का अधिकार किसी भी पार्टी कार्यकर्ता के लिए वर्जित है। शम्भूदा के माध्यम से लेखक ने इस बात को प्रकट कर दिया है। शम्भूदा दल के सदस्यों की व्यक्तिगत इच्छाओं का दमन करने के लिए कहते है, तो नि:सन्देह वे गीता के निष्काम कर्म का ही समर्थन करते हैं।

लेखक ने मंगल और शम्भूदा के रूप में मार्क्सवादी विचारकों की दो धाराएँ प्रस्तुत की है। एक धारा उन लोगों की है, जो परिस्थितिवश मार्क्सवादी हो गये हैं, जिन्होंने मार्क्सवाद को एक फैशन के रूप में ओढा है, लेकिन जो विचारों से सुविधा-भोगी एवं वैभव विलासी है। ऐसे लोगों की संख्या अधिक है। अन्दर से निहायत व्यक्तिवादी और बाहर से सर्वहारा के शुभचिन्तक होने का मुखौटा ओढे होते है। दूसरी ओर वह वर्ग है जो नींव का पत्थर बनने मात्र में सन्तुष्ट है, उसकी अपनी कोई विशिष्ट आकांक्षा नहीं है। वह सर्वहारा के सुख के लिए स्वयं को अनाम उत्सर्ग कर देने में ही तुष्ट है।

शम्भूदा के सम्मुख मंगल कितना छोटा-कितना बौना हो जाता है।

उसी के शब्दों में देखा जा सकता है --" मुझ जैसे लोग ही दल को कलंकित करते है। कहाँ तुलना है मेरी और शम्भूदा की। अपने को उनके साथ खडा कर मैं उनका अपमान नहीं करना चाहता ... कहाँ हिम-स्नात हिमालय की ऊँचाइयों से होड लेना उनका निष्कलंक व्यक्तित्व-अपने परिवेश के लिए पूर्ण समर्पित और कहाँ मैं - अनेक-अनेक कुण्ठाओं, विकृत आकांक्षाओं और लोभों से भरा हुआ पोखर।" १८

इस प्रकार के अनेक वक्तव्यों के माध्यम से मार्क्सवादी वैचारिकता को स्पष्ट करना लेखक का उद्देश्य रहा है।

७:८ मोह का क्षण --

मनुष्य के जीवन में मोह तथा शारीरिक आकर्षण आदि क्षण आते हैं। ये क्षण आदमी को उपर उठाते हैं या नीचे गिरा देते हैं। 'प्रिय शबनम' उपन्यास का नायक मंगल मोह के क्षण का शिकार हुआ है। भावुकता में बहा हुआ मंगल कहता है --" आज समझाता हूँ, भावुकता और शारीरिक आकर्षण एक दुर्बल क्षण व्यक्ति को कितना नीचे गिरा सकता है।" १९

मोह का क्षण आदमी को कैसे नीचे गिरा देता है तथा उसके परिणाम क्या होते हैं आदि का लेखक ने मंगल के चित्रण द्वारा प्रस्तुत किया है। शबनम के साथ की साफ-सुथरी जिन्दगी को मंगल शारीरिक आकर्षण के कारण ठुकरा देता है और अन्त तक पछताता रहता है। और नियति को दोष देते हुए भी मंगल बार-बार इस बात को भी दोहराता है कि -" एक क्षण के मोह में हम अपने युगों को दाँव पर लगा देते हैं।" २० मंगल के जीवन में शारीरिक आकर्षण से उथल-पुथल मचानेवाला चरित्र है, लाजो। लाजो के पीछे उसने शबनम को छोडा, किन्तु लाजो को पाकर भी वह लाजो को कहाँ पा सका। लाजो ने अंतत: उसके साथ जो धोखा किया उसे देखते हुए वह कह उठता है --" पुरुष के लिए औरत बहुत बडा मोह होता है, शायद सबसे बडा आकर्षण भी। लेकिन इस मोह में पडते समय यदि थोडा सा रुककर सोच लिया जाये तो जिन्दगी बन सकती है।.... गलत आधारों पर और भावावेश में बने ये सम्बन्ध किसी बडी से बडी शक्ति को भी नीचे अतल में ढकेल सकते हैं।" २१ इस प्रकार लेखक ने मोह के क्षण में पडते

समय जरा सोच लिया तो जिन्दगी बन सकती है । जीवन के इस तथ्य को नायक मंगल के माध्यम से प्रस्तुत कर दिया है ।

७:९ वर्ग चित्रण --

' प्रिय शबनम ' निम्न-मध्यवर्गीय बुध्दिजीवी की अन्तहीन पीडा और विषाद की गाथा है । हम देखते है कि समाज का निचला वर्ग तन से जोता है वह अपने तन को धन की खातिर खपाता है । उच्चवर्ग की स्थिति इसके विपरित है । वह धन से जोता है । वह अपने धन को तन की खातिर खपाता है । मध्यवर्ग की स्थिति इन दोनों से सर्वथा भिन्न है । वह न तो तन से जीता है और न धन से ही । वह जीता है मन से । और उसके लिए उसे अपना मन ही खपाना पडता है ।

मध्यवर्ग में दो वर्ग है -- एक उच्चमध्यवर्ग और दूसरा निम्नमध्यवर्ग । उच्च मध्यवर्ग के लोग व्यवस्था की उच्चता या विशेष सुविधाओं के कारण यह दर्जा प्राप्त कर लेता है ।इनके जीने के रंग ढंग में और उच्चवर्ग के रंग ढंग में कोई विशेष अन्तर नहीं दिखाई देता । इसीलिए ये लोग उच्चवर्ग में पहुँचने का लक्ष्य रखते हैं । प्रस्तुत उपन्यास में नायिका शबनम इसी वर्ग की है । लेखक ने उसके विचार रहन-सहन दूसरे वर्ग के प्रति सहानुभूति आदि शबनम में दिखाये है । उसकी फ्लैट,गाडी तथा पिताजी और उसके स्नेहील सम्बन्ध दिखाकर लेखक ने उसका वर्गानुरूप चित्रण किया है । कहा जाता है कि उच्च वर्ग के लोगों में विवेक तथा सर्वहारा के प्रति सहानुभूति नहीं होती परन्तु लेखक ने इस धारणा को तोडकर उसमें विवेक तथा निचले वर्ग के प्रति सहानुभूति दिखाई है । लेखक का यही उद्देश्य है ।

दूसरा वर्ग है निम्न मध्यवर्ग जो बुध्दि से जीता है । जिनका पेट खाली होता है,वे सुविधा से वंचित होते है,परन्तु मस्तिष्क से संपन्न रहनेवाला यह वर्ग है । जीवन की वास्तविकताओं को उनके आघातों को मानसिक धरातल पर यहाँ निम्न मध्यवर्ग झोलता है,भोगता है । दुनिया में अन्याय,अत्याचार शोषण सर्वप्रथम निम्न मध्यवर्ग ने जाना और इसीने इनके विरोध में आवाज भी उठायी ।

प्रस्तुत उपन्यास का पात्र मंगल भी इसी वर्ग का है। इसी परिवेश में पला हुआ है। अत:उसके मन में हमेशा एक हीनता की ग्रंथी बनी रही है। कॉलेज में भी प्रोफेसरों तथा छात्रों के सामने वह -" अपने को बहुत सांमान्य बहुत हीन महसूस करता। कभी-कभी सोचता मिस्टर मार्टिन ने मुझे कहाँ फँसा दिया। कोटद्वार या आस-पास कहीं स्कूल में नौकरी मिल ही जाती।" [२२]

कोलीवाडा की बस्तियों का यथार्थ चित्रण लेखक ने किया है। वर्ग की दूरी को चित्रित करना लेखक का एक उद्देश्य रहा है। उच्चवर्ग की शबनम निम्न-मध्यवर्ग के मंगल से प्यार करती है। मंगल को लगता है कि वह शबनम के सामने बौना है। वह कहता है --" मैं सोचा करता था,तुम्हारे पास ऐसी किस चीज की कमी है,जो मैं तुम्हें दे पाऊँगा.... और तुम्हारे मरोसे अपनी जिन्दगी को आसान बनाना... इसमें अपनी हेठी मालूम होती थी। इसे तुम मेरा मध्यवर्गीय संस्कार भी कह सकती हो।" [२३]

इसप्रकार देवेश जी का उद्देश्य रहा है कि उच्चमध्यवर्ग तथा निम्नमध्यवर्ग के पात्रों की परिस्थिति,परिवेश तथा वैचारिकता का सूक्ष्मता से चित्रण करना और इसमें लेखक सफल हुये है।

७:१० प्रकृति-चित्रण --

आधुनिक काल में हिन्दी के सामाजिक उपन्यासो में प्रकृति-चित्रण की कमी नजर आती है। सामाजिक उपन्यासो में तो समाज से सम्बन्धित परिवेश, परिस्थिति,रहन-सहन आदि काही चित्रण मिलता है। परन्तु प्रिय शबनम एक सामाजिक ,मध्यवर्गीय की कहानी होते हुये भी इसमें प्रकृति चित्रण के मनोहारी दृश्य चित्रित मिलते हैं। प्रकृति चित्रण के माध्यम से लेखक ने अपना प्रकृति-प्रेम चित्रित किया है। साथ में पात्रों के मन में चल रहे संघर्ष का आरोप प्रकृति पर करके अपना उद्देश्य साध्य किया है।

प्रकृति चित्रण से लेखक का उद्देश्य रहा है कि कथानक में सौन्दर्य लाना

तथा कथानक को गतिशील बनाना । उपन्यास की कथा की धुरी बम्बई महानगर से सम्बन्धित है परन्तु महानगर से उबकर लेखक का मन कोटद्वार एवं देहरादून की हरी-भरि पहाडी की ओर दौडता है । प्रकृति-चित्रण लेखक ने वर्णनात्मक ढंग से किया है । वरसोवा के सागर किनारे का चित्रण भी लेखक ने किया है । इसप्रकार लेखक का उद्देश्य रहा है कि महानगरीय जीवन की दमतोड थकान के साथ पाठक को प्रकृति के विविध आयाम की भी सैर कराये । प्रकृति-चित्रण के माध्यम से लेखक ने प्रकट करना चाहा है कि आदमी महानगरीय कलुषित वातावरण से तंग आकर गाँव की ओर भागता है । इस धारणा को लेखक ने तोडने का प्रयत्न किया है ।

७:११: सन्देश --

' प्रिय शबनम ' उपन्यास से देवेश जी का यही सन्देश है कि निराशा के कुहासे को चीर कर गंतव्य की ओर बढने के लिए संकल्प शक्ति जगानी है, निराशावादी जीवन दर्शन को उन्होंने ठुकरा दिया है । इतिहास से सिध्द है कि बार-बार गिरते हुए भी उठने और आगे बढने की शक्ति मानव समुदाय ने आस्था के बल पर पाई है जिसे किसी ईमानदार व्यक्ति के संकल्प तथा बलिदान ने मानव को प्रदान की है ।

लेखक ने पार्टी के माध्यम से सन्देश दिया है कि राजनीतिक,सामाजिक कार्यकर्ता का निजी जीवन भी एक खुली किताब होता है । निजता के सामान्यीकरण की यह प्रक्रिया एक दुष्कर साधना है जिसे आत्मगत और वस्तुगत सीमाओं को एकम-एक कर देने के बाद ही आत्मसात किया जा सकता है ।

लेखक ने दो नारी चरित्रों के माध्यम से सन्देश दिया है कि लाजो सामान्य तबके की ऐसी औरत है जो मंगल की जिन्दगी में अंतत: इस तरह दु:ख-शोक भर देती है कि मंगल करीब-करीब टूट जाता है । इसके विपरित शबनम उच्च तबके की ऐसी नारी है जो मंगल की सामान्य-सी जिन्दगी में प्रवेश कर उसे विचारों की एक नयी दिशा देती है ।

इस प्रकार लेखक ने अन्त में सन्देश दिया है कि व्यक्तिगत स्तर मी समाज सेवा की जा सकती है उसके लिए आस्था तथा संकल्प-शक्ति का होना आवश्यक है। दोहरा व्यक्तित्व अंत तक त्रास झेलता है परन्तु जिसके पास साफ दृष्टि हो, मानसिकता परिपक्व हो, जिनके सम्मुख उनका उद्देश्य स्पष्ट हो उन्हे कहीं मी कोई त्रास नहीं होता, मय कमी नहीं होता।

७:१२ <u>निष्कर्ष</u> —

' प्रिय शबनम ' मध्यवर्गीय बुध्दिजीवी की एक अनुठी कहानी है। मध्यवर्गीय बुध्दिजीवी की अन्तहीन पीडा और विषाद की यह गाथा है। यह फासलों और फसीलों की कहानी हैं। कि जिसमें सभी बडे या उच्च तबके के लोग बुरे नहीं होते और सभी निचले तबके के लोग नित्य अच्छे नहीं होते। मंगल जैसे मध्यवर्गीय बुध्दिजीवी व्यक्ति बहुत कुछ अपने कॉम्प्लेक्स से जूझाते है और शायद उससे वे उभर भी सकते किन्तु मंगल की चेतना में लाजो तथा उसकी मॉ ऐसी छा जाती है, कि उन स्थितियों पर उसका कोई बस नहीं रहता। अत: वह टूट जाता है। लेखक ने स्त्री-पुरुष सम्बन्धो का विस्तृत विवरण उससे उत्पन्न समस्याओं का चित्रण किया है। भावुकता और शारीरिक आकर्षण का एक दुर्बल क्षण व्यक्ति को नीचे गिरा सकता है। नारी में अपने को प्रदर्शित करने की भावना होती है, इस तथ्य को लेखकने लाजो के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

' प्रिय शबनम ' सांस्कारिक संघर्षों की गाथा है। कुण्ठाग्रस्त व्यक्ति का मनोद्घाटन करना लेखक का उद्देश्य रहा है। व्यक्ति में बचपन से ही हीनता की गंथी होती है वह उसका पीछा नहीं छोडती। इस बात को लेखकने मंगल के माध्यम से प्रस्तुत किया है। उपन्यास की कथा बम्बई महानगर में घटती है इसी कारण लेखकने महानगरीय समस्याओं की ओर पाठक का ध्यान आकर्षित किया है। उपन्यासकार की मान्यता है कि लेखक, विचारक और राजनेता को हमेशा निर्बल और प्रतिपक्ष का पक्षधर होना चाहिए। सर्वहाराओं की सेवा चरित्रहीन

व्यक्तियों द्वारा नही हो सकती । यहाँ लेखकने अपनी मार्क्सवादी वैचारिकता को चित्रित किया है । लेखकने वर्गगत चित्रण में सभी वर्गों का चित्रण सूक्ष्मता से किया है । अन्त में उपन्यासकार का समतावादी जीवन-दर्शन एवं पात्रों के पात्रों के मानसिक धरातल के अनुसार प्रकृति प्रेम को उपन्यास में प्रकृति के सौन्दर्य को प्रकट कर दिया है ।

लेखक ने शबनम तथा शम्मूदा के माध्यम से ठोस वैचारिक चारित्रिक-शुध्दता, निष्ठा आदि को प्रकट करना चाहा है । मंगल के माध्यम से मार्क्सवादी विचारकों को उधेड दिया है, जो ऊपर से सर्वहारा के शुभचिन्तक और भीतर से भोगवादी दर्शन के पोषक होते हैं । मंगल और शम्मूदा के रूप में लेखक ने मार्क्सवादी विचारकों की दो धाराएँ प्रस्तुत की है । कोई भी सिध्दान्त चाहे वह कितना भी महान क्यों न हो, जब तक उसे व्यवहारित करनेवाले लोग चरित्रवान नहीं होते है और उसे स्थानीय संस्कृति और परिस्थितियों से जोडते नहीं है वह सफल नहीं हो सकता । समाज में क्रान्ति लाने के लिए लोगों का मानस-परिवर्तन आवश्यक है । अपने सुख के साथ समाज के दु:खों को जोडकर हम अपने जीवन को सार्थक, बना सकते हैं । उसके लिए दल या संस्था से जुडने की आवश्यकता नहीं है । लेखक का कहना है, कि व्यक्तिगत स्तर पर भी जागृति संभाव्य हो सकती है । उसके लिए मन में ' आस्था ' का होना जरूरी है ।

सन्दर्भ

१ डॉ.दंगल झाल्टे - उपन्यास समीक्षा के नये प्रतिमान पृ.७८ ।

२ डॉ.प्रतापनारायण टण्डन हिन्दी उपन्यास कला पृ.३४१।

३ वही वही पृ.३४१ से ३५१ ।

४ सम्पा.वृक्षदेव मिश्र - पाण्डुलिपि पृ.१०३।
(डॉ.शंकर पुणतांबेकर 'प्रियशबनम' मध्यवर्गीय बुध्दिजीवी की एक अनुठी गाथा)

५ सम्पा.नन्दलाल यादव - देवेश ठाकुर :व्यक्ति ,समीक्षक और कथाकार पृ.१९५।
(डॉ.शशीप्रभा शास्त्री : फासलों और फसीलों की कहानी: 'प्रिय शबनम')

६ वही वही पृ.१९४।
(डॉ.भानुदेव शुक्ल - 'प्रिय शबनम' : लेखकीय दृष्टि)

७ वही वही पृ.२२४।
(डॉ.लालसाहब सिंह - 'प्रिय शबनम: मार्क्सवादी वैचारिकता)

८ वही वही पृ.१७१-१७२ ।
(डॉ.गोपाल : सांसारिक संघर्षों की गाथा :'प्रिय शबनम')

९ वही वही पृ.१७२-१७३ ।
(बालकृष्ण उपाध्याय -'प्रिय शबनम': समतावादी जीवन दर्शन का प्रस्तोता)

१० वही वही पृ.२५८,२६३ ।
(डॉ.ललित शुक्ल : उपन्यासों में मध्यवर्गीय विसंगतियाँ)

११ सम्पा.डॉ.वसुधा सहस्त्रबुध्दे ' प्रिय शबनम' एक अनुशीलन पृ.१ ।

१२ सम्पा.नन्दलाल यादव - देवेश ठाकुर : व्यक्ति समीक्षक और कथाकार पृ.२०७।
(डॉ.शंकर पुणतांबेकर :' प्रिय शबनम' मध्यवर्गीय बुध्दिजीवी की एक अनूठी गाथा)

१३) सम्पा.नन्दलाल यादव - देवेश ठाकुर :व्यक्ति समीक्षक और कथाकार पृ.२१५।
(डॉ.शंकर पुणतांबेकर: ' प्रिय शबनम ' मध्यवर्गीय बुध्दिजीवी की एक अनूठी गाथा)

१४)	डॉ.देवेश ठाकुर	- ' प्रिय शबनम '	पृ.५९ ।
१५)	वही	वही	पृ.२७
१६)	वही	वही	पृ.३५ ।
१७)	वही	वही	पृ.४८-४९।
१८)	वही	वही	पृ.५५ ।
१९)	वही	वही	पृ.४१ ।
२०)	वही	वही	पृ.७५ ।
२१)	वही	वही	पृ.७५-७६।
२२)	वही	वही	पृ.१४।
२३	वही	वही	पृ.२०।